अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्व विज्ञ (वर्ष : 2022) दिनांक : 17.08.2022

समय सीमा : 3 घंटा द्वितीय वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

भगवती (खण्ड-2)–70

प्र. 1 कोई पांच पारिभाषिक शब्द लिखें– 5

(क) पदार्थ का संयोग अनित्य है। इस अनित्यत्व का अनुचिन्तन–

(ख) जो उत्तरवैक्रिय-शरीर की रचना कर चुका है–

(ग) मंगल आदि तीन-चार ग्रहों की तिरछी लम्बी श्रेणी–

(घ) सुनने के लक्ष्य के बिना केवली की उपासना करने वाला–

(ङ) जिस निर्जरा का फल निर्वाण हो–

(च) उत्पादक-शक्ति का नाश–

(छ) सर्वथा दूसरे जीवों का वध करने वाला–

प्र. 2 कोई पांच प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें– 5

(क) भगवई के अनुसार कूटागार शाला किसे कहते हैं?

(ख) नैश्रेयसिक से क्या तात्पर्य है?

(ग) परिखा से क्या तात्पर्य है?

(घ) जीवधन किसे कहा जाता है और क्यों?

(ङ) ठाणं में अल्पवृष्टि और महावृष्टि के क्या कारण हैं?

(च) 'आउट्टति' का क्या तात्पर्य है?

(छ) गुल्म से क्या तात्पर्य है?

प्र. 3 कोई दस प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दें– 30

(क) सामानिक देव के बारे में लिखें।

(ख) धन के कितने व कौन से प्रकार हैं?

(ग) गव्यूत की अपेक्षा से शक्र, वज्र और चमर का यंत्र लिखें।

(घ) अवधिज्ञान के चार विकल्प लिखें।

(ङ) माया का अर्थ क्या है और मायी व अमायी कौनसे देवलोक में उत्पन्न होते हैं?

(च) जयाचार्य ने विभंगज्ञान को दर्शन-विपर्यय से पृथक कैसे बताया है?

(छ) देवनिकाय के दस प्रकारों के नाम लिखें।

(ज) सौधर्म और ईशान कल्प में आधिपत्य करने वाले देवों के नाम लिखें।

(झ) दक्षिणायन और उत्तरायण किसे कहते हैं?

(ञ) नींद के आधार पर छद्मस्थ और केवली में क्या अन्तर है?

(ट) समय-क्षेत्र और समयातीत क्षेत्रों को परिभाषित करते हुए बतायें कि किस क्षेत्र में लोक का कौन सा भाग आता है?

(ठ) मध्यलोक में कितने समुन्द्र हैं? उनमें प्रथम समुद्र के जलस्तर का वर्णन करें।

प्र. 4 कोई तीन प्रश्नों के उत्तर 5 से 7 पंक्तियों में दें– 15

(क) जीव आहारक और अनाहारक गति की अपेक्षा से कब होता है?

(ख) भोजन के अतिक्रमण के चारों प्रकारों का वर्णन करें।

(ग) अकर्कश वेदनीय कर्म पर टिप्पणी लिखें।

(घ) काम और भोग को स्पष्ट करते हुए बतायें कि कौन-कौन से जीव कामी और भोगी होते हैं? इनका अल्प–बहुत्व लिखें।

(ङ) संज्ञा के साथ शारीरिक और मानसिक परिवर्तनों की जानकारी का यंत्र लिखें।

प्र. 5 क्रिया और उसके प्रकारों का वर्णन करें। 15

अथवा

तमस्काय, कृष्णराजि तथा कृष्णविवर को परिभाषित करते हुए परस्पर तुलना करें।

झीणी चरचा–30

प्र. 6 कोई दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्ति में दें– 10

(क) उदय, उपशम, क्षायिक व क्षयोपशम भाव के कितने-कितने भेद हैं?

(ख) जीव परिणाम के दस नामों का उल्लेख करें।

(ग) मनुष्य में शुक्ल लेश्या की उत्कृष्ट स्थिति कितनी व किस अपेक्षा से होती है?

(घ) योग चतुःस्पर्शी है या अष्टस्पर्शी?

(ङ) पांच महाव्रत और बारह व्रत में सर्वमूलगुण, देशमूलगुण व देश उत्तरगुण कौन-कौन से हैं?

(च) क्षपक श्रेणी वाले का नवमें स्थान में क्षीण होने का क्रम बतायें।

(छ) तीर्थंकर के कौन से कर्म पुण्य होते हैं और कौन से पुण्य पाप दोनों होते हैं व किस कारण?

(ज) गृहस्थ के आहार व साधु के आहार में क्या अन्तर है?

(झ) ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से क्या प्राप्त होता है?

(ञ) अजीव परिणामी के दस भेदों को लिखें।

(ट) कषायकुशील निर्ग्रन्थ किस गुणस्थान तक होते हैं तथा उनमें कितनी लेश्या, शरीर व समुद्घात होते हैं?

प्र. 7 कोई तीन पद्यों के शब्दार्थ करें– 12

(क) 'निर्ग्रन्थ ग्यारमें बारमें रे, सिनातक केवली दोय जी।
सजोगी नै अजोगी कह्या रे, पहिला त्रिहुं नियंठा छट्ठे जोय।।'

(ख) दोष बयालीस आणाचार ए, निजगुण परगुण विचारो जी रे।
ए निजगुण छै जीव अशुभ गुण, परगुण अजीव म धारो रे।।

(ग) फर्सेन्द्री अचक्खूदर्शण, दोय अनाण बे भावो।
छः द्रव्य मांही जीव, नव में जीव निर्जरा न्यावो।।
सावद्य तसु कहियै नहीं हो, निखद उज्जल लेख।
करणी लेखे निरवद नहीं हो, सासतो असासतो देख।।

(घ) उदै-भाव तेजू पद्म सुकल लेश्या ते, नव में जीव आसव कहावे।
उदो-भाव निर्जरा नहिं होवै, पुन्य ग्रहण आसव उदै भावे रे।।

प्र. 8 छठे गुणस्थान में चारित्र की देश-विराधना के विभिन्न पहलुओं का वर्णन करें। 8

अथवा

ढाल 18 का सारांश लिखें।